गुजरात के पंचमहल जिले में सुंदर पहाड़ी पर स्थित पावागढ़ हिंदू धर्म के पवित्र शक्तिपीठों में से एक है। पावागढ़ के इस रमणीक और दर्शनीय स्थल को देखने लाखों लोग प्रतिवर्ष आते हैं। सुंदर झीलों और चारों ओर मनोरम पहाड़ी से घिरा यह स्थल बड़ा ही मनोरम दिखता है।

पश्चिम भारत के गुजरात राज्य में स्थित पावागढ़ की दूरी वडोदरा से करीब 46 किलो मीटर अहमदाबाद से 15 किलोमीटर दक्षिण में है। यहाँ स्थित काली मंदिर में बड़ी संख्या में भक्त माँ काली का दर्शन कर अपने मनोकामना पूर्ति की कामना करते हैं।

गुजरात की प्रसिद्ध पर्यटक स्थल पावागढ़ पर्वत की ऊंचाई पर बसा यह शक्तिपीठ सबसे जाग्रत शक्तिपीठ माना जाता है।यह स्थल ऋषि विश्वामित्र की तपोस्थली भी रही है जिन्होंने यहाँ माँ काली की मूर्ति की स्थापना कि थी। साथ ही इस स्थल का संबंध महान संगीतकार तानसेन के समकालीन बैजु बावरा से भी जुड़ा हुआ है। बैजु बावरा का जन्म यहीं पर हुआ था।

कहा जाता है भगवान शिव के द्वारा तांडव के दौरान सती के अंग गिरने से ही इस स्थल का नाम पावागढ़ पड़ा। पावागढ़ के नाम के पीछे दूसरी मान्यता है भी है।

पावागढ़ के प्राचीन इतिहास की बात की जाय तो इस स्थल से कई धार्मिक मान्यताएं जुड़ी हुई है। गुजरात का पावागढ़ एक अति प्राचीन धार्मिक स्थल है एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल के रूप में पावागढ़ का अपना एक समृद्ध इतिहास रहा है। इस स्थल की अस्तित्व त्रेता और द्वापर युग के समय में माना जाता है। इस स्थान के बारें में मान्यता है की यहाँ माँ सती के दाहिने पैर का अंगूठा गिरा था।

इस प्रकार यह हिन्दू समुदाय के प्रमुख शक्तिपीठों में से एक है। यही कारण है की यह स्थल हिन्दू धर्म के लिए बेहद ही पूजनीय और पवित्र माना जाता है। इस पवित्र स्थल का प्रतिवर्ष लाखों लोग दर्शन करने आते हैं। चांपानेर को प्राचीन काल में गुजरात की राजधानी भी माना जाता है।

कहा जाता है प्राचीन नगर चांपानेर को बसाने का श्रेय महाराजा वनराज चावड़ा को दिया जाता है। उन्होंने अपने प्रिय मंत्री चांपा के नाम पर इस नगर की स्थापना 746 ईस्वी के दौरान कि और इसका नाम चांपानेर रखा ।

पावागढ़ का जिक्र जैन धर्म ग्रंथों में भी मिलता है। जैन धर्म में भी इसका उल्लेख चांपानेर के नाम से मिलता है।

महाकाली मंदिर पावागढ़ का इतिहास से कई कहानी जुड़ी हैं। पावागढ़ में माँ काली की दक्षिणमुखी मंदिर स्थित है। यहाँ नवरात्र और खास अवसर पर विशेष तांत्रिक पूजा सम्पन्न की जाती है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों लोग देवी काली की पूजा अर्चना हेतु आते हैं।कहा जाता है की इस मंदिर में पूजा अर्चना से लोगों की मनोवांछित इच्छाओं की पूर्ति होती है।

पर्वत शिखर की ऊंचाई पर स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए रोपवे और सीढ़ियाँ बनी हुई है। करीब 250 सीढ़ियां चढ़ने के बाद माँ काली के मंदिर तक दर्शनार्थी पहुंचते हैं।

इस स्थान पर कभी रावल वंश के राजा राज्य करते थे। लोक कथाओं के अनुसार एक बार नवरात्र उत्सव के दौरान गरबा में माँ काली एक सुंदर स्त्री का रूप धारण कर शामिल हो गई।

वहाँ के राजा ने गरबा करते हुए उस सुंदर स्त्री के ऊपर कुदृष्टि डाली। परिणाम स्वरूप माँ ने उन्हें शाप दे दिया। जिसके कारण उसका राज्य छिन्न भिन्न हो गया।

गुजरात का पावागढ़ अपने पौराणिक और धार्मिक महत्त्व के कारण एक अलग स्थान रखता है। त्रेता युग में भी इस मंदिर का अस्तित्व माना जाता है।

पावागढ़ पहाड़ी पर स्थित प्राचीन प्रसिद्ध काली मंदिर की मूर्ति की स्थापना प्रसिद्ध ऋषि विश्वामित्र ने की थी। मान्यता है की ऋषि विश्वामित्र के नाम पर भी यहाँ बहने वाली नदी को विश्वामित्री के नाम से जाना जाता है। इस स्थल पर लव और कुश के अलावा अनेकों बौद्ध भिक्षुओं ने भी मोक्ष प्राप्त किया है ।

पावागढ़ गुजरात का एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल है।

पावागढ़ पर्वत पर स्थित शक्तिपीठ 52 शक्तिपीठों में से एक हैं।

पावागढ़ की पहाड़ी पर माँ काली का प्राचीन मंदिर स्थित है।
यहाँ पर प्राचीन ऋषि विश्वामित्र ने माता काली की कठोर तपस्या की थी।

पावागढ़ की ऊंचाई समुद्र तल से करीब 762 मीटर है।

इस शक्तिपीठ तक पहुँचने के लिए रोपवे और सीडियाँ दोनों सुविधा उपलबद्ध है।

यहाँ प्रतिवर्ष माध महीने के शुक्ल पक्ष त्रियोदशी को भव्य मेला का आयोजन होता है।

कहा जाता है की यहाँ लव और कुश ने मोक्ष की प्राप्ति की थी।

पावागढ़ जैन संप्रदाय के लिए भी काफी महत्व रखता है।

पावागढ़ के गोद में बसा चांपानेर नगर को प्राचीन गुजरात की राजधानी माना जाता है।

यूनेस्को 2004 में विश्व धरोहर की सूची में पावागढ़ को शामिल किया।